शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

कहानी की कसौटी के तत्त्वों का युगानुरूप विश्लेषण

डॉ० कृष्णकान्ति दीक्षित

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी०ए०-वी० कालेज, कानपुर

www.shodh.net

कहानी की कसौटी के तत्त्वों का युगानुरूप विश्लेषण

- डॉ० कृष्णकान्ति दीक्षित

कहानी की प्राचीनता, आवश्यकता एवं महत्त्व का प्रतिपादन इसी तथ्य से हो जाता है कि कहानी बीज रूप में वेदों में भी विद्यमान है। बीसवीं शती की अन्तिम दशक की कहानियाँ, पुस्तक के लेखक डॉ0 आशुतोष सिंह भदौरिया ने इस विशाल कथा-वृक्ष की शाखाओं को समीक्षा के औजारों से तराश कर सुन्दर स्वरूप देने का प्रयास किया है। लेखक ने इसके लिए सात अध्यायों के माध्यम से सोपान पार किए हैं।

प्रथम अध्याय में कहानी की विकास यात्रा का संक्षिप्त किन्तु सारग्राही रूप प्रस्तुत किया है, अर्थात् महत्त्वपूर्ण वर्णन छोड़ा नही है और अनावश्यक वर्णन से पूरा बचाव किया है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों में व्याप्त कहानियों का उल्लेख करते हुए आधुनिक काल में प्रेमचन्द तथा जयशंकर प्रसाद जैसे कहानीकारों के कथा कौशल को लेते हुए अज्ञेय की कहानियों के वैविध्य को रेखांकित करते हुए डॉ0 इलाचन्द्र जोशी की फ्रायड के सिद्धान्तों के कुछ सूत्र लेकर लिखी कहानियों को रेखांकित किया है।

इसके पश्चात बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अन्तिम दशक की हिन्दी कहानियाँ को स्वतन्त्र कहानी धारा, नई कहानी, साठोत्तरी कहानी, अकहानी, समान्तर कहानी, समकालीन कहानी, लघु कहानी रूपों में वर्णित करते हुए अन्तिम दशक की हिन्दी कहानी में लेखक ने प्रवेश किया और इस विभाजन को शोध की आवश्यकता को बड़े ही तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय में समकालीन कहानी साहित्य के कथ्य की नवीन दिशा पर प्रकाश डालने में लेखक समक्षम रहा है। इसी अध्याय में कहानियों के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक सामाजिक तथा शैक्षिक स्वरूप को उद्घाटित करती ख्यातिलब्ध कहानियों का शोधपरक विश्लेषण किया है। तृतीय अध्याय में अस्तित्व के केन्द्रीय स्थिति को वहन करती पात्र-योजना शोध दृष्टि में है, क्योंकि कहानी में जितना महत्त्व कथानक का है, उतना ही महत्त्व चारित्रिक निरूपण का है। आदर्श परम्परा नीति एवं संस्कृति का मर्यादापूर्ण विवेचन मनुष्य के प्रत्यक्ष और परोक्ष क्रिया प्रतिक्रिया से सम्बन्धित घटनाओं के माध्यम से होता है। इसी अध्याय में स्त्री तथा पुरुष वर्चस्व तथा स्त्री के दोयम दर्जे का माने-जाने की मानसिकता को दर्शाती कहानियों को चिन्हित करते हुए उपभोक्तावादी, बाजारीकरण, पाश्चात संस्कृति के दुष्प्रभावों को भी रेखांकित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में संवादों की समकालीन सन्दर्भ योजना को स्पष्ट किया है कि आज कहानी के पात्रों में जटिलता आई है। पात्र अब पहले जैसे पारदर्शी व्यक्तित्व प्रधान नहीं हैं।, पात्रों के व्यक्तित्व में आई जटिलता के कारण भाषा में जटिलता आई, अनेक पात्रों के संवादों से यह भलीभांति स्पष्ट हुआ है।

पंचम अध्याय में देशकाल वातावरण के बदले स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। वर्तमान में कथा में इतिहास, धर्म और कल्पना का समन्वय करते हुए निम्नवर्ग, मध्यवर्ग तथा उच्चवर्ग को लेते हुए ग्रामीण, नगरीय तथा महानगरीय जीवन का अत्यन्त प्रामाणिक स्वरूप उद्घाटित करती कहानियाँ हैं।

शिल्प विधान षष्ठ अध्याय के अन्तर्गत है, इसमें इस सत्य को पकड़ने में लेखक समर्थ रहा है कि अन्तिम दशक की कहानियों में शैल्पिक प्रयोगों को नए आयाम प्राप्त हुए किन्तु नई कहानी की अपेक्षा आधुनिक कहानी के बहुत से रचनाकार शिल्प के प्रति अधिक जागरूक नहीं दीखते हैं।

लेखक ने सप्तम अध्याय में उद्देश्य को अपेक्षित नई अर्थ भंगिमा में नियोजित करते हुए आज की कहानी की सच्चाई और प्रामाणिकता के बीच से गुजरने की अनुमतिपरक प्रक्रिया को, व्याख्यायित करने का प्रयत्न भिन्न-भिन्न रूपों में कहानीकारों की कहानियां को लेकर किया है, इसे पूरी ईमानदारी से लेखक ने स्पष्ट किया है।

इस प्रकार कहानी की विकास यात्रा से लेकर मूल्यांकन के औजारों को धार देते हुए परिवर्तन को पैनी दृष्टि से निहारिते हुए अधिसंख्य कहानियों को समीक्ष्य बनाया है। पुस्तक निश्चित रूप से कहानी के बदलते स्वरूप, कसौटी के मानकों को गहराई से समझाने में समर्थ होगी।

पुस्तक - बीसवीं सदी के अंतिम दशक की कहानियाँ
शोधकर्ता - डॉ० आशुतोश सिंह भदौरिया
शोध निर्देशिका - डॉ० विद्या चौहान

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

कहानी की कसौटी के तत्त्वों का युगानुरूप विश्लेषण

डॉ० कृष्णकान्ति दीक्षित

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी०ए०-वी० कालेज, कानपुर

www.shodh.net

कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर से उपाधि वर्ष २००६
प्रकाशन - आत्माराम एण्ड सन्स, लखनऊ (उ०प्र०)
पृ०सं० - ३१७
मूल्य - रू० ४००/-

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN